आँगनवाड़ियों में पर्यावरण जागरूकता

योगेश जी आर

जलवायु परिवर्तन के गहराते संकट को देखते हुए यह और आवश्यक होता जा रहा है कि कम उम्र से ही बच्चों को पर्यावरण के प्रति सजग बनाया जाए और उन्हें संवहनीयता के बारे में पढ़ाया जाए। अपने आस-पास के पर्यावरण की देखभाल और उसे सुरक्षित रखने की आदत का विकास करते हुए पर्यावरण के प्रति पारिस्थितिक रूप से एक सहानुभूतिपूर्ण रवैया विकसित करना, शिक्षा का एक अंग बन गया है।

निपुण भारत (The National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy) जो मूलभूत साक्षरता और संख्या ज्ञान को समर्पित एक राष्ट्रीय मिशन है, मूलभूत शिक्षा से जुड़े सीखने के परिणामों को तीन विकासात्मक लक्ष्यों में बाँटता है। विकासात्मक लक्ष्यों में तीसरा लक्ष्य है कि 'बच्चे काम से जुड़े रहने वाले शिक्षार्थी बनें और अपने निकटतम परिवेश से जुड़े रहें।' आँगनवाड़ी केन्द्रों में यह जुड़ाव पेड़ और पौधे, जानवर, हवा, पानी, परिवेश, सब्ज़ियाँ, फल, फूल और पक्षी जैसे विभिन्न विषयों के माध्यम से बनाया जाता है।

बच्चों के सर्वांगीण विकास की प्रक्रिया में शुरुआती बाल्यावस्था शिक्षा की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है। देशभर के आँगनवाड़ी केन्द्र सार्वजनिक पूर्वस्कूलों की तरह काम करते हैं। आँगनवाड़ी शिक्षिकाओं का काम पूर्वस्कूली बच्चों की पोषण की ज़रूरतों को पूरा करने तक सीमित नहीं होता बल्कि बच्चों के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास से जुड़ी ज़रूरतों का ध्यान रखना भी उनकी ज़िम्मेदारियों में शामिल होता है। शुरुआती वर्षों में बच्चे अपने निकटतम परिवेश से आसानी से जुड़ाव बना पाते हैं, इसलिए प्रकृति भ्रमण, फ़ील्ड भ्रमण जैसी विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से आँगनवाड़ी शिक्षिका ऐसे अवसर बना पाती हैं जिनके माध्यम से बच्चे स्थानीय आवासों का अवलोकन करते हुए उनके बारे में खोजबीन कर पाते हैं और इस तरह पर्यावरण के प्रति बच्चों के ज़्यादा सजग होने की बुनियाद रख दी जाती है।

थीम-आधारित पाठ्यचर्या

कई राज्यों ने शुरुआती कक्षाओं में, बच्चों के लिए विकासात्मक रूप से उपयुक्त, थीम-आधारित पाठ्यचर्याओं को लागू किया है। थीम का चयन बच्चों की रुचि, संस्कृति और परिवेश के आधार पर किया जाता है। चूँकि थीम की विषयवस्तु बच्चों की ज़िन्दगियों के साथ एकीकृत होती है इसलिए बच्चों को उसे बेहतर ढंग से समझने में मदद मिलती है। तेलंगाना राज्य में ईसीई पाठ्यचर्या की 14 थीम में से 9 पर्यावरण से जुड़ी हुई हैं। आँगनवाड़ी केन्द्रों में संवाद, कहानियाँ, गीत, नाटक और खेल किसी थीम विशेष के इर्द-गिर्द घूमते हैं और बच्चों के सीखने को सुदृढ़ करते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि उनका सीखा हुआ क़ायम रह सके। बच्चे सवाल पूछकर और अपने आस-पास की दुनिया की खोजबीन करके सीखते हैं।

विकासात्मक लक्ष्य 3

बच्चे काम से जुड़े रहने वाली शिक्षार्थी बनें और अपने निकटतम परिवेश से जुड़े रहें **(IL)**

प्रमुख दक्षताएँ

इन्द्रिय विकास	**संज्ञानात्मक कौशल**	**पर्यावरण सम्बन्धी अवधारणाएँ**
देखना, सुनना, स्पर्श, गन्ध लेना और स्वाद	अवलोकन, पहचान, स्मृति, मिलान, वर्गीकरण, पैटर्न पहचानना, क्रमबद्ध सोच, आलोचनात्मक सोच, समस्या सुलझाना, तार्किकता, जिज्ञासा, प्रयोग और खोजबीन	**प्राकृतिक** — जानवर, फल, सब्ज़ी, भोजन **भौतिक** — पानी, हवा, ऋतु, सूर्य, चन्द्रमा, दिन और रात **सामाजिक** — मैं, परिवार, परिवहन, त्योहार, सामुदायिक सहायक इत्यादि

आँगनवाड़ी की शिक्षिका लचीलापन अपनाते हुए किसी थीम की विषयवस्तु को अपनी आँगनवाड़ी के बच्चों के स्थानीय सन्दर्भ के अनुरूप परिवर्तित कर उसे उनके लिए ज़्यादा प्रासंगिक बना सकती हैं, जैसे — वे विषयवस्तु में उन चीज़ों के बदले, जिन्हें शायद बच्चे न जानते हों, स्थानीय फलों, सब्ज़ियों, पेड़ों और जानवरों को शामिल कर सकती हैं, जिन्हें बच्चे देखते और जानते हैं। उत्तर भारत का कोई बच्चा गोनगुरा की पत्तियों के बारे में नहीं जानता होगा, लेकिन तेलंगाना के बच्चे के लिए ये आम पत्तियाँ हो सकती हैं। ऐसा करने से बच्चे, जो पढ़ाया जा रहा है उसे वास्तविक जीवन के अनुभवों और उनके पूर्वज्ञान पर आधारित शिक्षा से जोड़ पाते हैं, जिससे यह पढ़ाई उनके लिए सार्थक और दिलचस्प बन जाती है। थीम-आधारित शिक्षण बच्चों को उनके पारिस्थितिक तंत्र में मौजूद प्राकृतिक संसाधनों के प्रति जागरूकता विकसित करने में भी मददगार होता है।

इन थीमों का उपयोग करके शिक्षिका छोटे बच्चों को विभिन्न गतिविधियों में सक्रिय रूप से जोड़ सकती हैं ताकि उन्हें संवहनीयता और उपलब्ध संसाधनों के कम उपयोग-पुन:उपयोग-पुन:चक्रण जैसी अवधारणाओं से परिचित करा सकें। पानी और बिजली को बर्बाद नहीं करने और ज़रूरत न होने पर नल, लाइट, पंखे आदि को बन्द करने जैसे ऊर्जा और जल संरक्षण के तरीक़ों को आँगनवाड़ी केन्द्रों में और घरों में उदाहरणों और ताक़ीदों के द्वारा बच्चों के मन में बैठाना और उनकी आदतों में शामिल करना ज़रूरी है।

चित्र-1 : आँगनवाड़ी परिसर में लगे एक पेड़ की छाल की बनावट की जाँच-पड़ताल करते बच्चे।

यहाँ पर्यावरण जागरूकता की थीमों के कुछ उदाहरण दिए गए हैं और यह बताया गया है कि कैसे ये छोटे बच्चों को प्रभावित करती हैं और आँगनवाड़ी शिक्षिकाएँ कक्षा में क्या करती हैं।

पेड़ और पौधे

कई आँगनवाड़ी केन्द्रों के परिसरों में पेड़ और पौधे लगे होते हैं, ख़ासतौर से ग्रामीण क्षेत्रों में। आँगनवाड़ी शिक्षिका बच्चों को कक्षा-कक्ष से बाहर ले जाकर, उन्हें विभिन्न पेड़-पौधों को पहचानने में और उनका नाम बताने में मदद करती हैं और उनके विभिन्न भागों को दिखाती हैं। वे बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए उन्हें विभिन्न पेड़-पौधों के भागों को छूकर उनकी अलग-अलग बनावटों को महसूस करने में मदद करती हैं।

शिक्षिका बच्चों से गिरी हुई सूखी पत्तियाँ, टहनियाँ, बीजों की फलियाँ और फूलों को एक छोटे बैग में इकट्ठा करके रखने को कहती हैं। केन्द्र पर वापस आने के बाद शिक्षिका इकट्ठा की गई सभी वस्तुओं को छाँटने, वर्गीकृत करने और उन्हें नाम देने में बच्चों की मदद करती हैं। वे बच्चों को इसके लिए भी प्रेरित करती हैं कि वे बीज की फलियों को खोलकर देखें कि क्या होता है।

बातचीत के दौरान शिक्षिका बच्चों से खेती की चर्चा करती हैं और बताती हैं कि किस तरह पेड़-पौधों से मिलने वाले विभिन्न उत्पाद जैसे फ़र्नीचर, पेपर, कपड़ा और भोजन हमारे लिए उपयोगी हैं। शिक्षिका वृक्षों के और महत्त्व भी बच्चों को बताती हैं जैसे कि वे हमें शुद्ध वायु और वर्षा देते हैं व पक्षियों, कीड़ों और जानवरों के आवास भी होते हैं। और इस तरह शिक्षिका वृक्षों को संरक्षित किए जाने की ज़रूरत पर ज़ोर देती हैं।

जानवर

बच्चे अक्सर उन जानवरों के प्रति आकृष्ट रहते हैं, जो उनकी दुनिया का एक हिस्सा होते हैं। उनके घरों में पालतू जानवर होते हैं, वे उन्हें अपने परिवेश में देखते हैं या फिर क़िताबों, कार्टूनों और फ़िल्मों में उनकी तस्वीरें देखते हैं। शिक्षिकाएँ जानवरों के स्वरूपों, आकारों, रंगों और आवासों को देखकर उन्हें पहचानने में बच्चों की मदद करती हैं और अपने परिवेश में रहने वाले जानवरों के प्रति दयालुता और परवाह का भाव रखने के महत्त्व पर भी ज़ोर देती हैं। बच्चों को जानवरों की आवाज़ों की नक़ल करना बहुत अच्छा लगता है। शिक्षिका फ्लैशकार्डों और क़िताबों का उपयोग करके जंगली जानवरों, उनके आवासों, उनकी गतिविधियों और उनके आहारों से बच्चों का परिचय कराती हैं। जानवरों पर आधारित गतिविधियाँ बच्चों को इस बारे में चर्चा करने का मौक़ा देती हैं कि जानवर किस तरह उपयोगी होते हैं और हमारी मदद करते हैं। वे बच्चे जो पालतू जानवरों के साथ बड़े होते हैं, जानवरों से प्रेम करना और उनके प्रति सहानुभूति रखना सीख जाते हैं।

हवा, पानी, परिवेश

वैज्ञानिकों की तरह बच्चे भी अपने परिवेश के प्रति स्वाभाविक रूप से जिज्ञासु होते हैं। वे ध्यान से देखते हैं कि चीज़ें कैसे काम करती हैं कल्पना करने की कोशिश करते हैं कि चीज़ें जैसी होती हैं वैसी क्यों होती हैं। शिक्षिका बच्चों को जितने ज़्यादा मौक़े उपलब्ध कराती हैं, बच्चे अपने परिवेश को उतने ही बेहतर ढंग से समझेंगे और उसके प्रति संवेदनशीलता विकसित कर पाएँगे। बच्चों को पास-पड़ोस में प्रकृति भ्रमण पर ले जाने के दौरान शिक्षिका बच्चों का ध्यान साफ़ और गन्दगी से भरी जगहों पर भी दिलाती हैं और बच्चों के घरों, आँगनवाड़ी केन्द्र और बाहरी परिवेश में स्वच्छता बनाए रखने के महत्त्व के बारे में बात करती हैं।

प्लास्टिक के थैले और बोतलों को उठाकर पास-पड़ोस की सफ़ाई में बच्चों को शामिल करने से उनमें स्वच्छता के प्रति जागरूकता आती है और उनके माध्यम से उनके परिवारों और समुदाय में भी अपने परिवेश को साफ-सुथरा रखने की जागरूकता आती है।

पानी की थीम को बच्चों से साझा करते हुए, बातचीत की शुरुआत में शिक्षिका बच्चों से उन सभी चीज़ों के नाम बताने को कहती हैं जिनके लिए वे पानी का इस्तेमाल करते हैं और पानी के महत्त्व को उजागर करती हैं। खाना खाने से पहले हाथ धोते समय शिक्षिका इस बात को दोहराती हैं कि बच्चों को पानी नहीं बहाना चाहिए। हाथ धोने वाले पानी को वहाँ से किचन गार्डन की तरफ़ मोड़ दिया जाता है और इस प्रकार उसका पुनःउपयोग हो जाता है। ये व्यवहार बच्चों को बहुत छोटी उम्र से प्राकृतिक रूप से उपलब्ध संसाधनों के संरक्षण के प्रति सचेत रहने में मदद करते हैं।

पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता पैदा करने वाली गतिविधियाँ

साभिनय (एक्शन) गीत और कहानियों का उपयोग

बच्चों का पर्यावरण से शुरुआती परिचय उनके घर के बड़े-बुज़ुर्गों द्वारा सुनाई जाने वाली कहानियों से होता है, जिनमें आमतौर पर जानवर मुख्य क़िरदार होते हैं। आँगनवाड़ी शिक्षक भी इसे आधार बनाते हुए गीतों और कहानियों का इस्तेमाल प्रारम्भिक वर्षों में शिक्षण के प्रमुख ढंग के रूप में करते हैं। बच्चे जानवरों की विभिन्न विशेषताओं और व्यवहारों, उनके आवासों और आहार सम्बन्धी आदतों के बारे में जान पाते हैं, जिससे उनके अन्दर प्राकृतिक दुनिया के बारे में और अधिक जानने-खोजने की जिज्ञासा उत्पन्न होती है।

प्रकृति भ्रमण और फ़ील्ड विज़िट

थीम के आधार पर शिक्षिका बच्चों को आस-पास के खेतों, पशुशालाओं, पार्कों आदि में भ्रमण के लिए ले जाती हैं ताकि उन्हें उस विषय का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जा सके, जिसे शिक्षिका उस समय पढ़ा रही होती हैं। उदाहरण के लिए, शिक्षिका बीज से पौधा बनने की प्रक्रिया के विभिन्न चरणों के बारे में चर्चा करें इसकी बजाय बच्चे इसे किसी पास के खेत में जाकर और किसानों को अनाज या सब्ज़ियाँ उगाते हुए देखकर स्वाभाविक रूप से इस बारे में सीखते हैं। इन फ़ील्ड विज़िट के दौरान बच्चे अपने समुदाय के बड़े-बुज़ुर्गों से संवाद करके

स्कूलपूर्व शिक्षा 1	स्कूलपूर्व शिक्षा 2	स्कूलपूर्व शिक्षा 3 (बालवाटिका)
IL 1.1 पर्यावरण का अवलोकन करने और उसकी खोजबीन करने के लिए सभी इन्द्रियों का इस्तेमाल करना	**IL 2.1** पर्यावरण का अवलोकन करने और उसकी खोजबीन करने के लिए पाँच इन्द्रियों का इस्तेमाल करना	**IL 3.1** पर्यावरण का अवलोकन करने और उसकी खोजबीन करने के लिए सभी इन्द्रियों का इस्तेमाल करना
IL 1.1 सामान्य चीज़ों, आवाज़ों, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों, घटनाओं आदि को पहचानना और उनके नाम बताना	**IL 2.2** सामान्य चीज़ों, आवाज़ों, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों, घटनाओं आदि का वर्णन करना	**IL 3.2** अपने निकटतम परिवेश की सामान्य चीज़ों, आवाज़ों, लोगों, चित्रों, जानवरों, पक्षियों, घटनाओं आदि पर गौर करना और उनका बारीक़ी से वर्णन करना

चित्र-2 : इनमें से कई अधिगम परिणामों को हासिल करने में प्रकृति भ्रमण से मदद मिलती है।

*IL : काम से जुड़े रहने वाले शिक्षार्थी (Involved Learner)

चित्र-3 : प्रकृति भ्रमण के दौरान बकरियों का अवलोकन करते बच्चे।

चित्र-4 : पास के एक घर के बग़ीचे में प्रकृति भ्रमण के दौरान पौधे के विभिन्न भागों को समझातीं शिक्षिका। बच्चे पौधों को छूकर महसूस करते हैं।

भी बहुत कुछ सीखते हैं। प्रकृति भ्रमण के पहले शिक्षक बच्चों को आवश्यक निर्देश भी देते हैं जैसे-पौधों से फूल या पत्तियाँ न तोड़ना, जानवरों पर पत्थर नहीं फेंकना आदि। इस तरह के निर्देश भी बच्चों में पर्यावरण जागरूकता और संवेदनशीलता विकसित करने में मददगार होते हैं।

प्रकृति भ्रमण से बच्चों के मन में एक आश्चर्य का भाव पैदा होता है जिससे उनकी जिज्ञासा और पनपती है और इसके चलते वे अपनी शिक्षिका से छानबीन भरे कई सवाल पूछते हैं। इस तरह प्रकृति भ्रमण से बच्चों को कुछ नया सीखने के कई मौक़े मिलते हैं। वे अलग-अलग आकृतियों और आकारों के पेड़-पौधे भी देखते हैं, जिससे वे प्रकृति में मौजूद विविधता को समझ पाते हैं।

प्रकृति भ्रमण के दौरान आस-पास की चीज़ों पर ध्यान दिलाने से बच्चे अपनी सभी इन्द्रियों के साथ अवलोकन करने के लिए प्रेरित होते हैं। अपने प्राकृतिक परिवेश में जानवरों को और प्रकृति के सौन्दर्य को देखकर उन्हें प्राकृतिक दुनिया को समझने में मदद मिलती है और सीखने के आनन्ददायी अनुभवों के लिए एक अवसर भी पैदा होता है।

किचन गार्डन

पोषण अभियान के तहत महिला एवं बाल विकास विभाग आँगनवाड़ी केन्द्रों को किचिन गार्डन विकसित करने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है, जिसके अन्तर्गत फल और सब्ज़ियों के पेड़-पौधे आँगनवाड़ी परिसर में लगा दिए जाएँ। बच्चे तभी सर्वश्रेष्ठ रूप से सीखते हैं जब वे चीज़ों को ख़ुद करते हैं। किचन गार्डन बनाने में बच्चों को शामिल करने से उन्हें पौधों की देखभाल करने और उनकी ज़िम्मेदारी लेने में मदद मिलती है।

पौधे का विकास कैसे होता है, इसे बच्चों को समझाने के लिए

शिक्षिका एक गतिविधि करवाती हैं। वे बच्चों से कहती हैं कि उनमें से हर एक बच्चा ज़मीन में लगा एक बीज है। हर बच्चे से ख़ुद को गेंद की भाँति सिकोड़ लेने के लिए कहा जाता है। वे आगे कहती हैं कि अब बारिश हो रही है और फिर धूप निकल रही है। जब भी वे यह कहती हैं कि बारिश हो रही है तो बच्चों से ख़ुद को धीरे-धीरे सीधे होते जाने के लिए कहा जाता है। फिर वे बच्चों से अपना सिर उठाने के लिए बोलती हैं और कहती हैं कि बीज अब बढ़ने लगा है और अब वे सब ज़मीन में से निकलते छोटे-छोटे पौधे हैं। फिर वे बच्चों को धीरे-धीरे खड़ा होने के लिए कहती हैं जो यह दर्शाता है कि पौधा ऊँचा और ऊँचा होता जा रहा है। बच्चों से अपने हाथ उठाकर बाहर की ओर फैलाने के लिए कहा जाता है जो छोटी-छोटी शाखाओं को दर्शाते हैं। मुट्ठी बन्द किए हुए बच्चों से धीरे-धीरे अपनी मुट्ठियाँ खोलने के लिए कहा जाता है जो खिलते हुए फूल को दर्शाता है। इस तरह की गतिविधियों से बच्चों को यह समझने में मदद मिलती है कि पौधे भी उनकी तरह जीवित होते हैं और उनकी देखभाल व सुरक्षा भी ज़रूरी है।

इसके बाद शिक्षिका बच्चों से कहती हैं कि अब वे एक बीज बोएँगे और तब तक उसकी देखभाल करेंगे जब तक कि वह एक बड़ा पौधा नहीं बन जाता। वे हर बच्चे के लिए ज़मीन का एक टुकड़ा निर्धारित कर देती हैं और उनसे कहती हैं कि एक छोटी-सी डण्डी लेकर मिट्टी को ढीला करें। फिर प्रत्येक बच्चे को कुछ बीज दिए जाते हैं और उनसे इन्हें ज़मीन में बोने और फिर मिट्टी से ढँकने के लिए कहा जाता है। बच्चे रोज़ अपने-अपने ज़मीन के टुकड़े को पानी देते हैं और बीज में से अंकुर फूटने का इन्तज़ार करते हैं। प्रत्येक सप्ताह सर्किल टाइम के दौरान बच्चों से पूछा जाता है कि उनके पौधे कैसे हैं और बच्चे अपने अनुभव बड़े उत्साह के साथ बताते हैं।

शिक्षिका किचन गार्डन के इर्द-गिर्द और भी गतिविधियों की योजना बनाती हैं जैसे बच्चों से उनके पौधे के अलग-अलग चरणों के चित्र बनाकर उनमें रंग भरने को कहना। मासिक ईसीसीई दिवस (शिक्षक-अभिभावक मीटिंग) के लिए जब अभिभावक स्कूल आते हैं तब बच्चों को इस बात के लिए प्रेरित किया जाता है कि वे अपने पौधे अपने अभिभावकों को दिखाएँ। किचन गार्डन से सब्ज़ियाँ तोड़ने और उन्हें मध्याह्न भोजन में शामिल करने के लिए देने में भी बच्चों की मदद की जाती है। मध्याह्न भोजन करते हुए बच्चे उस समय रोमांचित हो जाते हैं जब उन्हें यह बताया जाता है कि वे ख़ुद की उगाई हुई चीज़ें ही खा रहे हैं।

किचन गार्डन में पौधे उगाने, रोज़ उन्हें पानी देने और उन्हें बढ़ता हुआ देखने का अनुभव पौधे के विकास की प्रक्रिया को समझने और संज्ञानात्मक विकास में बच्चों की मदद करता है। बग़ीचे में काम करने से बच्चों के पेशीय कौशल विकसित होने में भी मदद मिलती है। पौधे के बढ़ने का इन्तज़ार करना बच्चों के अन्दर धैर्य और दृढ़ता पैदा करता है और एकाग्रता व ध्यान केन्द्रित रखने जैसी क्षमताओं को बेहतर करता है। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों में ज़िम्मेदारी और उपलब्धि का भाव भी विकसित होता है और पौधों की देखभाल करना धीरे-धीरे उन्हें अपने प्राकृतिक परिवेश की देखभाल करने की ओर ले जाएगा।

निष्कर्ष

शुरुआती वर्षों में अपनी प्राकृतिक दुनिया से जुड़ाव रखना बच्चों को अपने परिवेश से एक रिश्ता बनाने में मदद करता है। रोज़ के अवलोकनों से सीखने से उनके लिए अभी तक सीखी हुई बातों से सम्बन्ध जोड़ना और उस सीखे हुए को और पुख़्ता करना आसान हो जाता है। वे जो देखते हैं उसके बारे

IL 1.8 b अपने निकटतम परिवेश के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करना और सम्बन्धित प्रश्न पूछना	**IL 2. 8 b** अपने निकटतम परिवेश के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करना और प्रश्न पूछना (सम्बन्धित अवधारणाएँ विकसित करना)	**IL 3. 8 b** पर्यावरण की वस्तुओं की जाँच-पड़ताल और उनमें हेर-फेर करना, प्रश्न पूछना, पूछताछ करना, खोज करना, ख़ुद के विचार बनाना और अनुमान लगाना
IL 1.8 c पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता प्रदर्शित करना (उदाहरण — पौधों को पानी देना)	**IL 2. 8 c** पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता प्रदर्शित करना (उदाहरण — पौधों को पानी देना, फूल न तोड़ना या जानवरों को हानि नहीं पहुँचाना)	**IL 3. 8 c** पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति जागरूकता और संवेदनशीलता प्रदर्शित करना (उदाहरण — पानी को बर्बाद न करना, उपयोग न होने पर बिजली उपकरणों को बन्द करना इत्यादि)

चित्र-5 : इनमें से कई अधिगम परिणामों को हासिल करने में किचन गार्डन से जुड़ी गतिविधियाँ बच्चों की मदद करती हैं।
*IL : काम से जुड़े रहने वाले शिक्षार्थी (Involved Learner)

में अन्य बच्चों, शिक्षकों और अभिभावकों से बात करने से उनके सामाजिक कौशलों का भी निर्माण होने में मदद मिलती है। जब वे विभिन्न पेड़-पौधों और उनके विभिन्न हिस्सों तथा जानवरों के नाम जान जाते हैं तो इससे उनकी शब्दावली बढ़ती है और उनका भाषायी कौशल बेहतर होता है। अपने आस-पास की चीज़ों को ध्यान से देखने का कौशल उन चीज़ों की तैयारी है जिन्हें वे प्राथमिक कक्षाओं में ज़्यादा विस्तार से सीखेंगे। पर्यावरण के प्रति जागरूकता पैदा करना और बच्चों को उनके शुरुआती वर्षों में पर्यावरण को बचाने के कार्य में शामिल करने का प्रभाव आजीवन रहता है।

चित्र-6 : किचन गार्डन में नन्हे पौधों की देखभाल करते बच्चे।

References

NAEYC. (2015). Exploring Math and Science in Preschool. National Association for the Education of Young Children.

Ministry of Human Resource Development (MHRD). (2019). School Nutrition Gardens Mid-Day Meals scheme. New Delhi. Government of India.

योगेश जी आर तेलंगाना के संगारेड्डी ज़िले में अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन की प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) पहल की अगुआई करते हैं। उन्होंने ईसीई में स्रोत व्यक्तियों की एक टीम का मार्गदर्शन करने में और आँगनवाड़ी शिक्षकों के क्षमता-वर्धन के लिए एक मापनीय बहु-विध जुड़ाव का तरीक़ा विकसित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। वे इस क्षेत्र में फ़ाउण्डेशन के अन्य ज़िला संस्थानों को भी सहयोग करते हैं। इसके पूर्व उन्होंने फ़ाउण्डेशन के पुदुचेरी जिला संस्थान में प्राथमिक और उच्च प्राथमिक कक्षाओं के शिक्षकों के क्षमता-वर्धन के लिए काम किया था। वे 24 से अधिक वर्षों से शिक्षा, आईटी और प्रबन्धन के क्षेत्रों में विभिन्न क्षमताओं में काम कर रहे हैं। उनसे yogesh.r@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है।

अनुवाद : अनुराधा जैन **पुनरीक्षण :** भरत त्रिपाठी **कॉपी एडिटर :** अनुज उपाध्याय